बचत और सामाजिक सुरक्षा

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ सम्पादक : मगनभाअी प्रभुदास देसाअी अंक २६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २९ अगस्त, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

हमारे सामने विकल्प

श्री कुमारप्पाको मुझसे शिकायत है कि अखिल भारत ग्राम-अुद्योग-संघको बनाने और रास्ता दिखानेवाला होकर भी अैसा लगता है कि मैं अुसे सौतेला लड़का-सा समझता हूं। मैंने भी अुन्हें जवाबमें सुना दिया है कि यह शिकायत गहरा विचार न करनेके कारण है। मगर वे यों ही हार मान लेनेवाले थोड़े ही हैं। अिसलिअे वे बार-बार मुझ पर यही अिल्जाम लगाते रहते हैं। अुन्हें तब तक संतोष नहीं होगा, जब तक मैं दुनियामें यह ढिंढोरा न पीट दूं कि दूसरे ग्राम-अुद्योगोंका वही दर्जा है जो खादीका है। जहां तक सिद्धान्तसे ताल्लुक है, मेरे नजदीक वह अितना साफ है कि खोलकर समझानेकी जरूरत ही नहीं। मगर जहां तक अुस पर अमल होनेका सवाल है, श्री कुमारप्पाकी बात सही है। लोग सिद्धान्त पर नहीं चला करते। यही वजह है कि कअी आदमियोंने अिन्हीं दिनों मुझे शिकायत की है कि हम अैसे लोगोंको जानते हैं जो खादी तो अिस्तेमाल करते हैं, पर गांवोंकी बनी हुअी दूसरी चीजें काममें नहीं लेते। अुनका खयाल यह मालूम होता है कि बहुतसे कांग्रेसी खादी तो अिसलिअे पहन लेते हैं कि वह (कांग्रेस) विधानकी रूसे जरूरी है, मगर खादीमें अुनका विश्वास न होनेसे, जहां तक दूसरी चीजोंका संबंध है, वे अपनी सुविधाके सिवाय और किसी बातका खयाल ही नहीं करते। अिसे मैं शब्दका पालन और भावनाका हनन कहता हूं। और जहां भावना मर गअी, वहां शब्द अुतना ही बेकार है जितना कि प्राणप्यारे अुड़ जाने पर शरीर बेकार हो जाता है।

मैंने अकसर कहा है कि खादी मध्यवर्ती सूर्य है और दूसरे ग्राम-अुद्योग ग्रहोंकी तरह अुसके चारों तरफ घूमते हैं। अिनकी कोअी स्वतंत्र हस्ती नहीं है। अिसी तरह दूसरे ग्राम-अुद्योगोंके बिना खादी नहीं जी सकती है। ये सब पूरी तरह अेक दूसरे पर निर्भर हैं। सच तो यह है कि हमें गांवोंवाला भारत या शहरोंवाला भारत, अिन दो में से अेकको चुन लेना है। देहात अुसी समयसे हैं जबसे यह देश है। शहरोंको विदेशी आधिपत्यने बनाया है और जब यह आधिपत्य मिट जायगा, तो शहरोंको देहातके मातहत होकर रहना पड़ेगा। आज तो शहरोंका बोलबाला है और वे गांवोंकी दौलत खींच लेते हैं। अिससे गांवोंका ह्रास और नाश हो रहा है। गांवोंका शोषण खुद संगठित हिंसा है। अगर हमें स्वराज्यकी रचना अहिंसाके पाये पर करनी है, तो गांवोंको अुनका वाजिब स्थान देना पड़ेगा। यह तब तक नहीं होगा, जब तक कि शहरी कारखानोंमें बनी हुअी चीजोंके बजाय गांवोंकी बनी चीजें अिस्तेमाल करके हम ग्राम-अुद्योगोंको फिरसे जीवित न कर देंगे।

शायद अब यह स्पष्ट हो गया कि मैं खादी और अहिंसाको अेक ही चीज क्यों बताता हूं। खादी गांवकी मुख्य दस्तकारी है। खादी मरी कि अुसके साथ ही गांव और अहिंसा दोनों मरे। यह मैं आंकड़ोंसे साबित नहीं कर सकता। अिसका प्रमाण प्रत्यक्ष है।

(हरिजनसेवक, २०-१-'४०) मो० क० गांधी

बेकारीकी समस्या

कामकी बुनियाद

नागरिकोंका यह धर्म है कि वे हरअेक चीजकी बुनियादमें जाकर नित्य-निरंतर विचारकी सफाअी और विचारका संशोधन करें। अिस तरह नागरिक अपनी जिम्मेवारी समझकर सोचेंगे तो हमारा देश निर्भय बनेगा। देशमें नगर और ग्राम, दोनों होते हैं। देशकी बुद्धिमत्ता नगरोंमें होती है और श्रम-शक्ति ग्रामोंमें होती है। दोनोंकी अपनी-अपनी जिम्मेवारी होती है, अिसलिअे दोनोंके सहयोगकी जरूरत है। नागरिकोंको देशके रक्षक साबित होना चाहिये, नित्य-निरंतर देहातोंकी सेवाके बारेमें सोचना चाहिये और अपनी सेवा देहातोंको अर्पण करनी चाहिये।

विरोधका अजीब तरीका

मद्रासमें राजाजीने तालीममें फरक करना चाहा। अुन्होंने अेक योजना बनायी, जिसके अनुसार विद्यार्थी तीन घंटे पढ़ाअी करेगा और बाकीका समय बढ़अी, बुनकर, किसान अिनमें से किसीके पास अुद्योग सीखनेमें बितायेगा, ताकि अुसका दिल और दिमाग, दोनों विकसित हो सकें। लेकिन कुछ लोगोंको यह विचार पसन्द नहीं आया। वे कहने लगे, "आप शहरवालोंकी बुद्धि तो बढ़ने देंगे और हमें ही श्रम करनेके लिअे कहते हैं। हमें कहते हैं कि आटा पीसते रहो और हल जोतते रहो। अिसीलिअे हम अिस योजनाका विरोध करते हैं।" अुस विरोधका तरीका अुन्होंने निकाला — ट्रेन रोकना, गड़बड़ करना। अुधर बंगालमें भी वही बात हो रही है। यह जो हिंसाकी शक्ति काम कर रही है, अिसका कारण मूलमें क्या है? अिस बात पर हमें सोचना चाहिये।

बेकारी बढ़ रही है

हमें स्वराज्य तो मिल गया, लेकिन सारे मसले अभी तक वैसे ही हैं। पांच सालके लिअे सरकारने अेक प्लान बनाया और अुसमें से आधा समय बीत जानेके बाद अब ध्यानमें आता है कि बेकारी बढ़ रही है।

अभी आगरामें अ० भा० कांग्रेस-कमेटीकी बैठकमें अेक प्रस्तावके जरिये कहा गया है कि बेकारी बढ़ रही है, अिसलिअे योजनामें संशोधन करना जरूरी है। पंचवर्षीय योजना बनी। अुसके ढाअी साल बाद अनुभव होना चाहिये था कि बेकारी कुछ तो कम हुअी। परंतु सारा अुल्टा ही अनुभव हो रहा है। अिसका मतलब यह है कि हमारा दिमाग सुस्त है, ठीक ढंगसे नहीं सोच रहा है।

मैं मानता हूं कि कोअी भी प्लान कायमके लिअे नहीं बनता। वह लचीला होता है। हमारे चिंतनमें बहुत कुछ गड़बड़ हुअी है, अैसा कहना होगा। और फिर कुछ थोड़ा-सा साधारण

www.vinoba.in

फरक करनेसे लाभ नहीं होगा, क्योंकि मूलभूत गलती हुअी है। आज जो प्लान कर रहे हैं, वे सब हिन्दुस्तानके बड़े भारी देश-सेवक हैं। वे देशसेवा ही करना चाहते हैं, परंतु जहां देशका मसला हल करना है, वहां बुनियादी तौर पर न सोचा जाय तो क्या नतीजा आयगा? मैंने अुनसे कहा कि आप अिस देशमें बेकारीका मसला हल करनेकी जिम्मेवारी नहीं अुठाते हैं, तो आपका प्लानिंग नेशनल प्लानिंग नहीं, पार्शियल प्लानिंग होगा; क्योंकि नेशनल प्लानिंगका यह पास्टुलेट — गृहीत तत्त्व — है कि देशके सब लोगोंको काम दे सकते हैं। यह कोअी सिद्ध करनेकी बात नहीं है। यूक्लिडके जो पास्टुलेट — गृहीत तत्त्व — होते हैं, वे सिद्ध नहीं करने पड़ते। अिसलिअे जिस किसीने यह माना कि देशके सब लोगोंको हम काम नहीं दे सकते, अुसने नेशनल प्लानिंग करनेकी अपनी अयोग्यता सिद्ध की। कोअी भी बाप, फिर वह कितना भी गरीब क्यों न हो, यह नहीं कह सकता कि मैं अपने घरके चंद लोगोंको ही खिला सकता हूं और दूसरोंको नहीं खिला सकता। हरअेक पिता कहता है कि अिस कुटुम्बमें जो कमाअी होगी, वह कुटुम्बके सब व्यक्तियोंमें बंटेगी। अिसी लिहाजसे मैंने देशके सामने यह बात रखी। मैंने कहा कि अक्सर हरअेक घरमें पांच भाअी होते हैं, अिसलिअे छठा भाअी दरिद्रनारायणका प्रतिनिधि बनकर मैं आया हूं, अैसा मानो। वह अव्यक्त है, परंतु नारायण अव्यक्त ही होता है; अिसलिअे अुस पर श्रद्धा रखकर अुसके लिअे छठा हिस्सा दो, अैसी मैंने मांग की और मैं मानता हूं कि हमारी राष्ट्रीय सरकार अैसी मांग सब लोगोंसे कर सकती है। अुसे वैसी मांग करनेका हक है और अुसे सहयोग देना लोगोंका कर्तव्य है। अैसा हो तो देशमें कोअी भी भूखा नहीं रहेगा। अगर तकली देनेसे सबको काम मिलता है तो हम तकली दें। चरखा देनेसे काम मिलता है तो हम चरखा दें। यंत्रका आग्रह नहीं रखना चाहिये। या तो पार्शियल बेकारी या यंत्र, अैसा सवाल आपके सामने हो तो हम यंत्र ही अिस्तेमाल करेंगे, अैसा कहना और यंत्रोंकी आसक्ति रखना ठीक नहीं है।

यंत्रोंका विरोध नहीं

यंत्र तीन प्रकारके होते हैं: समय-साधक, संहारक और अुत्पादक।

१. समय-साधक यंत्रोंका मैं विरोध नहीं करता। ट्रेन, हवाअी-जहाज जैसे यंत्रोंसे अुत्पादन नहीं बढ़ता, बल्कि समय बचता है। दस हजार घोड़ोंसे हवाअी जहाजकी बराबरी नहीं हो सकती, अिसलिअे अैसे यंत्रोंको हम चाहते हैं।

२. तोप, बंदूक, बम जैसे संहारक यंत्रोंका अहिंसामें स्थान नहीं है। अिसलिअे अैसे यंत्रोंको हम नहीं चाहते।

३. अुत्पादक यंत्र दो प्रकारके होते हैं: पूरक और मारक। जहां लोग अधिक हैं, वहां कोअी यंत्र लोगोंको बेकार बनाता है, तो वह मारक है। पर जहां मनुष्य-शक्ति कम है और काम ज्यादा है, वहां पर वही यंत्र मारक नहीं पूरक साबित होगा। अेक देशमें अेक यंत्र पूरक है, तो दूसरे देशमें वही यंत्र मारक हो सकता है। हिन्दुस्तानमें बड़े-बड़े ट्रेक्टर जैसे यंत्र लानेसे लाजमी तौर पर बेकारी बढ़नेवाली है। परंतु अमेरिका, आस्ट्रेलिया जैसे देशमें वे ही यंत्र मारक नहीं, अुत्पादक साबित होंगे। अुसी तरह अेक कालमें अेक यंत्र पूरक हो, तो दूसरे कालमें वही मारक बन जाता है। अिस तरह देश, काल और परिस्थितिके अनुसार कोअी भी यंत्र पूरक या मारक साबित होता है। अिसलिअे यंत्र शब्दसे न हम स्नेह रखना चाहते हैं और न अुसका विरोध ही करना चाहते हैं। किसी भी यंत्रकी अुपयोगिता देखकर हम अुसका अुपयोग करेंगे। परंतु अगर हम यंत्रकी आसक्ति रखते हैं और कहते हैं कि मिलकी बराबरी करनेकी क्षमता रखनेवाले (अेफीशिअेन्ट) ग्रामोद्योग नहीं हैं, अिसलिअे हम अुनका अुपयोग नहीं करेंगे, तो हमारा यह चिन्तन गलत माना जायगा। केवल पश्चिममें अेक बात चली अिसलिअे हम भी अुसके भुलावेमें आकर अेक बात करते हैं — बावजूद अिसके कि गांधीजीने हमें आगाह कर दिया था — तो हम गलती करते हैं। मैंने देखा है कि जहां हम समताकी बात करते हैं, वहां सामनेवाले अुसके विरोधमें विषमताकी बात तो नहीं कर सकते। परंतु वे अेफिशिअेन्सी, क्षमताकी बात करते हैं। वे कहते हैं कि आप समतावादी हैं, तो हम क्षमतावादी हैं। अिस तरह वे अेक गुणके विरुद्ध दूसरा गुण खड़ा करते हैं, जिससे लड़ाअी चल सकती है। आजकल पूंजीवादियोंने क्षमताका ही नारा लगाया है। मैं भी क्षमता चाहता हूं, परंतु मैं यह नहीं चाहता कि कुटुम्बमें कुछ लोगोंको खाना मिले और कुछ लोगोंको नहीं। मैं चाहता हूं कि सबको खाना मिले। अगर आजकी हालतमें ग्रामोद्योगके औजार सबको खाना देनेमें समर्थ हैं, तो अुनका अुपयोग करना चाहिये। चंद लोगोंको बेकार रखकर हम कभी भी सक्षम बननेका दावा नहीं कर सकते। मुझे खुशी है कि अभी आगरामें कांग्रेस-कमेटीकी बैठकमें ग्रामोद्योगों पर ध्यान दिया गया।

ग्रामोद्योगकी आवश्यकता

आज हिन्दुस्तानमें यत्र-तत्र-सर्वत्र असंतोष है, दिलमें समाधान नहीं है और वह किसी-न-किसी कारणसे प्रगट होता है। लोग कभी मसले लेकर हिंसा करनेको प्रवृत्त होते हैं, क्योंकि अुनके दिलमें असमाधान है, जो हिंसाके रूपमें फूट निकलता है।

मैं जब शरणार्थियोंमें काम कर रहा था, तब मैंने देखा कि वहांके मारवाड़ी व्यापारी सिंधी व्यापारियोंका विरोध करते थे और सिंधी-मारवाड़ी-वाद चला था। मैंने कहा कि यह वाद तो निकम्मी बात है, यह अेक निमित्त बना है। कभी मारवाड़ी विरुद्ध सिंधी, कभी तेलंग विरुद्ध कन्नड़, कभी बिहारी विरुद्ध बंगाली और कभी हिंदू विरुद्ध मुसलमान, आज ये जो सारे वाद चलते हैं, अुनमें मूल बात यह है कि हिन्दुस्तानमें आज अुत्पादन अत्यन्त कम है और बेकारी ज्यादा है। अिसके कारण यह असंतोष निर्माण हुआ है और वह फूट निकलता है। अिसके लिअे कुछ किया जाना चाहिये। असंतोष मिटानेकी कोशिश होनी चाहिये।

गांधीजीकी यह खूबी थी कि वे पहले जिसे मददकी सबसे अधिक जरूरत होती, अुसे मदद देते थे। अभी कवि दुखायलने मुझे सुनाया कि मदद देनेका क्रम यह है कि पहले भुखिया, फिर दुखिया और बादमें सुखिया। परंतु आज तो अिससे अुलटा क्रम चला है। अिसीलिअे गांधीजी हमेशा अैसी बात सोचते थे कि जिन्हें मददकी सबसे प्रथम आवश्यकता है, अुन्हें मदद देनेका तरीका ढूंढ़ा जाय। अिसीमें से चरखा निकला है। यह अुनकी अद्‌भुत प्रतिभा थी। वह अुनकी काव्य-शक्ति थी। सिर्फ कुछ सतरें लिख डालनेसे कोअी कवि नहीं बनता है। व्यासाचार्यने कहा है 'कविः क्रान्तदर्शी' — जिसे क्रान्तिका दर्शन होता है, जिसे सूक्ष्म दर्शन होता है, वह कवि है। अिसी अर्थमें गांधीजी कवि थे। अुन्होंने कअी साल पहले कह दिया था कि हिन्दुस्तानके लिअे ग्रामोद्योग जरूरी हैं। अुन्होंने नयी तालीम, राष्ट्रभाषा, जमीनका बंटवारा आदिके संबंधमें कअी साल पहलेसे कह रखा था। कितनी अुनकी महान् बुद्धिमत्ता है, कितनी अुनकी प्रतिभा है, कितनी अुनकी वत्सलता है!

विनोबा

www.vinoba.in

बछड़ा और शेरनी

बुनकर और मिलोंके संबंध

बुनकरोंकी अेक सभामें राजाजीने कहा, "हाथ-करघे पर बुननेवाले बुनकरों द्वारा मिल-सूतकी अपेक्षा करना, गायके बछड़े द्वारा शेरनीके दूधकी अपेक्षा करनेके समान है। शेरनीके दिलमें बछड़ेको दूध पिलानेकी क्वचित् अिच्छा हुअी भी, तो वह अुसे कभी न कभी चट कर ही जायेगी!"

दिल्लीवालोंका मानस

सात-आठ मास पहले आजके बुनकर कैसे टिकाये जायं, अिस पर चर्चा करते हुअे राजाजीने कहा था, "धोतियां और साड़ियां बुननेकी मिलवालोंको मनाही कर दी जाय। अुसके बिना बुनकरोंका रक्षण संभव नहीं।" अिससे दिल्लीवाले बेचैन हो अुठे। राजाजीकी अिस सूचनाको पहले तो अुन्होंने दुत्कार ही दिया। फिर काफी चर्चाके बाद अिस सूचनामें बहुत-सा पानी मिलाकर अुसे पतला बना लिया गया और तब अुसका घूंट बुनकरोंको पिलाना अुन्होंने कबूल किया। लेकिन अिससे राजाजीको तो समाधान होनेवाला नहीं था।

दिल्लीवालोंकी बुद्धि पर पूंजीपतियोंकी जो छाप है, अुसे ध्यानमें लेते हुअे अुन्होंने बुनकरोंको पतली-पतली कांजी ही क्यों न हो, देना स्वीकार किया, यह भी अेक विशेष बात समझनी चाहिये। लेकिन अुनके लिअे तो दूसरा कोअी अिलाज भी नहीं था, क्योंकि राजाजीकी सूचनाको सौ प्रतिशत ठुकरानेका मतलब होता कांग्रेसके हाथसे मद्रास प्रांतका चला जाना।

राजाजीकी महत्ता

मद्रासका कारोबार हाथमें लेते ही राजाजीने पहले चावल परसे कंट्रोल हटा लिया। परिणाम-स्वरूप राज्य स्थिर हुआ। राजाजीने कहा, "मेरा चरित्र-लेखक दूसरी कोअी बात लिखे या न लिखे; लेकिन मैंने अनाज परसे कंट्रोल हटा दिया, अितनी भी बात अुसने लिखी, तो मेरे जीवनका वह सार्थक होगा।" श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ देशको अिसी प्रकार बचा लिया करते हैं। राज्यकी मजबूतीके लिअे दूसरी जरूरी बात थी बुनकरोंको स्थिर करना। अिस-लिअे फिर राजाजीने अुस प्रश्नको हाथमें लिया। अैसी हालतोंके बीच अुनके सुझावको संपूर्णतः ठुकरा देना दिल्लीवालोंके लिअे संभव न था। अतः केंद्रीय सरकारने अपना पंजा शिथिल किया।

फिरसे हाथ-सूतकी ओर!

धोतियों और साड़ियोंकी हद तक मिलों पर अंकुश रखनेकी बात जब राजाजीको सूझी, तो अुनको अुस कल्पनासे अितना अुत्साह महसूस हुआ कि अुस अुत्साहके आवेगमें अुन्होंने हाथ-सूतका आग्रह रखनेवाले खादीके बावलोंका अुपहास भी सहजमें कर दिया। पर सात-आठ महीनोंके अनुभवसे अुनका वह आवेग ठंडा पड़ गया, अैसा दीखता है। 'व्याघ्र-दुग्ध-वासना' की व्यर्थता समझा कर अुन्होंने अिस समय बुनकरोंसे कहा, "भाअियो, अिसी-लिअे तो गांधीजी कहते थे कि बुनकरोंको हाथ-सूतका सहारा लेना चाहिये।" 'ग्रामोदय' नामक तमिल पाक्षिकने राजाजीके भाषणका जो अुद्धरण दिया है, अुस परसे मैं यह लिख रहा हूं।

दुःखद अितिहास

सन् १९०६ और १९०७ में 'स्वदेशी-आन्दोलन' प्रारंभ हुआ। खादीकी कल्पना अुस आन्दोलनमें नहीं थी। वह अंग्रेजी वस्तुओंके बहिष्कारकी हद तक ही सीमित था। अिसका लाभ मिलवालोंने अिस तरह अुठाया कि स्वदेशी आन्दोलनवाले पस्त हो गये। फिर गांधीजीने स्वदेशीकी कल्पनाका परिष्कार करके कहा कि "वह पुरानी स्वदेशी निकम्मी है। ग्रामोद्योग पर जोर देनेवाली स्वदेशी ही सच्ची है।" यह कहकर अुन्होंने खादी निकाली। लेकिन फिर सन् १९३० में जब गांधीजी जेलमें थे, तब अंग्रेज-सरकार पर त्वरित और निश्चित दबाव पड़े, अिसलिअे कांग्रेसवालोंने अेक बार फिर पुरानी स्वदेशीको लोगोंके सामने रखा। अुस समय भी मिलवालोंने वही काम किया! अिधर सन् १९४७-४८ में भी कंट्रोल अुठानेके लिअे गांधीजीने तीव्र आक्रोश किया और आखिर कंट्रोल जैसे-तैसे हटाया गया। गांधीजीने कहा, "व्यापारियों पर अिस समय बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। अुनको वस्तुओंके भाव नहीं बढ़ाने चाहिये।" अैसा जता कर वे तो चले गये, पर अिधर मिलवालोंने फिर अपना वही रूप दिखाया।

यह सारा अितिहास भूल जानेकी बहुत अिच्छा होती है। लेकिन ये भले आदमी अुसे भूलने दें तब न! पुरानी यादगारें ताजी होती रहें, अैसा ही बरताव वे करते हैं!

विनोबा

पूंजी अेक सामाजिक ट्रस्ट है

'हिन्दुस्तान टाअिम्स' का विशेष प्रतिनिधि अेक अुद्योगपतिके साथ हुअी अपनी बातचीतकी रिपोर्टके दौरानमें कहता है (पत्रके ७ जुलाअी, १९५३ के अंकमें):

> "अेक प्रमुख अुद्योगपतिने, जो नये अुद्योगोंमें बहुत बड़ी पूंजी लगानेकी हैसियत रखते हैं और जिन्हें मैंने पूछा कि वे नये अुद्योगोंमें पैसा क्यों नहीं लगाते, मुझे साफ शब्दोंमें पूछा कि अिसके लिअे क्या प्रेरणा और प्रोत्साहन है? अुन्होंने यह कहकर अपने अुत्तरको समझाया कि आज अगर १ करोड़की पूंजी किसी नये अुद्योगमें लगाअी जाय, तो वह कमसे कम तीन सालमें मुनाफा देना शुरू करेगी। अिसके बाद यदि वह मान लीजिये २५ लाखकी कुल आमदनी देती है, तो लगभग १५ लाख रुपये तो घिसाअीके रूपमें चले जायंगे, क्योंकि आजकल कारखानेमें ज्यादा महंगी मशीनें लगानी होती हैं। बाकी जो रकम बचेगी अुसमें से कर चुकानेके बाद मुश्किलसे ५ लाख बचेंगे; अिसमें से अगर संबंधित अुद्योगपतिसे 'सुपर-टैक्स' काट लिया जाय, तो अुसके पास मुश्किलसे दो लाख रुपये बचेंगे। अिसका मतलब यह हुआ कि लगाअी हुअी पूंजीको फिरसे पानेके लिअे अुसे ५० साल तक धीरजके साथ प्रतीक्षा करनी होगी।"

तो खुद पूंजी लगानेवालेके हिसाबसे भी लगाअी हुअी पूंजी पर अुसे अपना व्यवस्था-खर्च और अैसे दूसरे खर्च निकालनेके बाद कमसे कम २ प्रतिशत असल मुनाफा होगा। लेकिन अिससे अुसे सन्तोष नहीं है; जैसा कि वह सोचता है, अुसे अुसकी पूंजी भी वापस मिलनी चाहिये। अुसे अिससे सन्तोष नहीं होता कि वह अपनी मरजीके मुताबिक अुस पूंजीका अुपयोग करता है और अुचित ब्याज भी वसूल करता है; अुसे अधिक पूंजी भी पैदा करनी है, ताकि वह अुस पर भी व्यक्तिगत मुनाफा पा सके और पूंजीकी और बढ़ा सके।

संक्षेपमें यह पूंजीवादका सच्चा स्वरूप है। वह अिसे स्वीकार नहीं करता कि पूंजी लगानेवालेके हाथमें समाजने जो पैसा रखा है वह अुसकी खानगी मिल्कियत नहीं है, बल्कि अुसे सौंपा हुआ सामाजिक ट्रस्ट है। सारी पूंजी समाजकी पैदा की हुअी है। अिसलिअे अगर व्यक्तिगत लाभके लिअे और सामाजिक हितके खिलाफ अुसका अुपयोग किया जाय, तो वह सामाजिक अन्याय और पूंजीका दुरुपयोग ही होगा। जब कोअी पूंजी लगानेवाला सामाजिक बचतके नाते मिली हुअी पूंजीको फिरसे किसी अुद्योगमें लगाता है, तो ज्यादासे ज्यादा वह ब्याज पानेका ही अधिकारी हो सकता है; अुस पूंजी पर अुसकी मालिकीका केवल अितना ही अर्थ हो सकता है। ट्रस्टीशिपके सिद्धान्तके अनुसार, शांतिपूर्ण और अहिंसक सामाजिक और आर्थिक रचनाकी यही सच्ची बुनियाद है। राज्यको अपने वाणिज्य, अुद्योग और व्यापारिक पेढ़ियोंसे संबंध रखनेवाले कानूनोंमें अिस सिद्धान्तका समावेश कर लेना चाहिये।

१३-७-'५३ **मगनभाअी देसाअी**

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२९ अगस्त १९५३

बचत और सामाजिक सुरक्षा

मध्यमवर्ग संख्याकी दृष्टिसे छोटा तो है, पर हमारे समाजकी रचनाकी वह अेक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। समाजवादकी पारिभाषिक शब्दावलीमें जिसे 'पेटी बुर्ज्वा' या 'अिन्टेलिजेन्शिया' (बुद्धिजीवी वर्ग) कहते हैं, वह मुख्यतः यह मध्यमवर्ग ही है। समाजके सामाजिक और आर्थिक जीवनमें अिस वर्गका अेक विशेष — लगभग केन्द्रीय स्थान है। हमारी आजकी पूंजीवादी व्यवस्थामें अिस वर्गका सदस्य अपनी छोटी बचतके जरिये पूंजीकी रचनाका अेक महत्त्वपूर्ण साधन पेश करता है। और चूंकि यह व्यवस्था मुख्यतः पूंजीके ही आधार पर चलती है, मध्यमवर्गके सदस्यको अेक खास राजनीतिक महत्त्व भी हासिल हो जाता है। अुसे यह पैसा बड़े-बड़े व्यापारोंसे होनेवाले मुनाफेके रूपमें नहीं मिलता; वह क्लर्क या मैनेजरकी तरह सरकार या बड़ी व्यापारी पेढ़ियोंमें नौकरी करता है, और अिन छोटी-छोटी नौकरियोंसे जो वेतन मिलता है, अुसमें से होनेवाली बचतके रूपमें वह यह पैसा अिकट्ठा करता है। अिसलिअे बड़े अुद्योगों और व्यापारवालोंका वह बहुत ताकतवर दोस्त और अत्यंत अुपयोगी अेजेंट होता है। बड़े व्यापारवालोंका काम अुसके बिना नहीं चल सकता। वह न केवल अुनकी नौकरी करता है, बल्कि अुन्हें अपने कार्य-ज्ञान, संगठनशक्ति, बुद्धि और अपनी बचतके जरिये काफी प्रमाणमें पूंजीकी मदद भी देता है।

सरकारको भी अिस वर्गमें अेक अच्छा सहायक प्राप्त है। सरकारके अधिकांश महकमोंमें जो काम चलता है, अुसका संचालन और संपादन यही वर्ग करता है। नौकरीके जरिये बड़े व्यापारोंके संचालनमें मदद पहुंचाकर वह अुन्हें मुनाफा कमानेमें मदद करता है, जिससे सरकारको कअी तरहकी आमदनी होती है। सरकार अपनी आमदनीके अधिकांशके लिअे बड़े व्यापारों पर आधार रखती है। अिस तरह पूंजीवादी व्यवस्थामें मध्यमवर्ग, बड़े व्यापारवालों और सरकारके बीच अेक तरहका समझौता होता है। और अुनका यह समझौता सामान्य जनताके प्रत्यक्ष विरोधमें खड़ा होता है, अैसा चाहे हम न कहें, पर अुसमें सामान्य जनताकी अुपेक्षा तो अवश्य है।

मध्यमवर्गकी अिस बचतके दूसरे पहलूका भी खयाल रखना चाहिये। वे लोग अुसे बीमा, शेअर या स्टाक आदिमें जमा करते हैं, तो कठिनाअीके समय अुन्हें यह बचत काम आती है। अिस तरह अिस वर्गको अेक तरहकी सामाजिक सुरक्षा प्राप्त हो जाती है। अिस सुरक्षाको सामाजिक तो हम कहते हैं, पर असलमें वह अेक वर्गकी या कुछ व्यक्तियोंकी ही सुरक्षा है। वह अकल्पित आपत्तियोंके निवारणार्थ किया हुआ पारिवारिक सुरक्षाका प्रयत्न है। अिस तरह अिस वर्गके लोगोंको बचतके लिअे बड़ी प्रेरणा मिलती है और पूंजीवादी व्यवस्थाके साथ सहयोग करने और अुसके लिअे काम करनेका अेक बड़ा कारण प्राप्त होता है।

अिसके खिलाफ वैसे तो कोअी आपत्ति नहीं अुठाअी जाती। लेकिन यह सवाल जरूर है कि बाकी बहुसंख्यक जनताकी सुरक्षाका क्या हो, जो राष्ट्रके असली काम करनेवाले हैं। बड़े व्यापारोंके अधिपति और मध्यमवर्गके लोग तो आखिर हमारे समाजका अेक बहुत छोटा अंश हैं। आज हमारी बुद्धि पर जो अर्थशास्त्र हावी है, अुसके अनुसार मेहनत-मजदूरीको पूंजी और व्यवस्था-शक्तिके बाद स्थान दिया जाता है। न केवल अुसका महत्त्व कम माना जाता है बल्कि पारिश्रमिक भी कम दिया जाता है। पूंजी तो आयका सबसे बड़ा हिस्सा हड़प जाती है और चैनसे रहती है, लेकिन सामान्य जनता अव्वल तो अभावमें और बेकारीके डरमें रहती है, अन्यथा किसी तरह गुजर-बसर चलाती है। अिस तरह हम देखते हैं कि अुसके लिअे तो सामाजिक सुरक्षा जैसी कोअी चीज है ही नहीं।

सवाल यह है कि क्या यह न्याय्य और अुचित है। बेकारीको (यह बेकारी भी मुख्यतः मध्यमवर्गकी है) या शिक्षितोंकी बेकारीको दूर करनेके लिअे पूंजी अिकट्ठी करनेके नाम पर सरकार और अुद्योग-धंधेवाले, दोनों छोटी बचत (स्मॉल सेव्हिंग्ज़) को प्रोत्साहन देनेकी पुकार मचाते हैं। सवाल यह है कि अगर यह निर्धन मजदूर और किसान जनताको गरीबी और सामाजिक अरक्षाकी स्थितिमें रखकर ही संभव है, तो क्या अुसे किसी तरह सही और अुचित माना जा सकता है? अुससे किसका हित होगा? क्या यह सर्वोदय है?

जाहिर है कि यह नीति सर्वोदयके अनुकूल नहीं है। और अिसलिअे अगर हम अपनी अर्थरचनाका निर्माण अिस तरह करते हैं, तो अुसकी नींव दीन-दुःखी और अरक्षित जनता पर होगी — वह बालू पर अुठायी हुअी भीतकी तरह कमजोर और अस्थिर होगी। अिस तरह हम जनताको आजाद और सुखी प्रजाकी आवश्यक सुविधाओंसे वंचित रखेंगे। अिसलिअे व्यापारका साम्राज्य बढ़ानेवाले अुद्योग-प्रधान पश्चिमकी राह पर चलनेमें न तो बुद्धिमानी है और न वह तात्कालिक लाभकी दृष्टिसे ही ठीक है। हमें तो गांधीजीने सर्वोदयका जो नया रास्ता दुनियाको दिखाया है, अुसीके आधार पर अपना नया मार्ग ढूंढ़ना चाहिये। सर्वोदयका आधार यह क्रान्तिकारी सिद्धान्त है कि संसारके लिअे शोषण-रहित और मनुजोचित नयी अर्थ-व्यवस्थाका प्रथम और मुख्य साधन मनुष्य और अुसकी मजदूरी है, बाकी सब अुसके बाद आता है और अिन दो की तुलनामें अुसका महत्त्व भी गौण ही माना जाना चाहिये।

२५-८-'५३ मगनभाअी देसाअी

(अंग्रेजीसे)

नौजवानोंके जानने लायक

ता० १८-७-'५३ के 'हरिजनबंधु'* में प्रकाशित 'ग्रामशक्तिका निर्माण' और 'ग्रामीण तेल-अुद्योग' शीर्षक लेख पढ़कर सूरत जिलेसे अेक ग्रामसेवक भाअी लिखते हैं कि:

"ये लेख यदि गांवके लोगोंकी निगाहमें आ जायें, तो वे जरूर अिस पर अमल करेंगे। अेक किसानकी दृष्टिसे मैं अिसके लाभ नीचे मुताबिक बतलाता हूं:

१. यदि किसान बैल-घानीमें अपने घरकी तिल्ली पेराता है, तो अुसे तेल सस्ता पड़ता है और शुद्ध भी मिलता है;

२. जो भाअी घानी चलायेगा अुसे अच्छी रोजी मिलेगी;

३. तिल और मूंगफलीका अुत्पादन बढ़ेगा;

४. किसान स्वावलम्बी बननेका प्रयत्न करेगा;

५. बैलोंको खानेके लिअे ताजी खली मिलेगी।

"अिसके सिवा तिल या मूंगफलीकी घानीमें से किसानको कौनसी घानी अनुकूल होगी — बैल-घानी या मशीन-घानी? कुछ किसान भाअियोंसे पूछने पर अुनकी ओरसे यह राय

* ये लेख 'हरिजनसेवक' में क्रमशः ता० १८-७-'५३ और २५-७-'५३ के अंकोंमें अुपर्युक्त शीर्षकसे छपे हैं।

www.vinoba.in

मिली कि गांवमें बैल-घानी ही ठीक होगी। और मैं भी अुनके साथ अिस बातमें सहमत हुआ।

"मैंने आपके लिखे हुअे लेख अुनके आगे पढ़कर सुनाये। वे अुन्हें बहुत पसन्द आये। अुन्होंने गांवमें घानी लानेकी कोशिश शुरू कर दी है। हमारे गांवमें बहुतसे भाअियोंने अपने खेतोंमें तिल बोअी है। अिस तिलकी फसल, जिसका दाना थोड़ा छोटा होता है, बहुत जल्दी तैयार हो जाती है। गांवके लोगोंने स्वावलम्बी बननेके लिअे मुझे वचन भी दिया है।

"कताअी-कामके लिअे बहुतसे भाअी तैयार हो गये हैं। चरखा-द्वादशीके दिनसे हमारे गांवके लोग कताअीकी शुरू-आत करनेवाले हैं। कपड़ेके बारेमें भी वे जहां तक होगा स्वावलम्बी बनेंगे। यह दिलचस्पी गांवके लोगोंमें अिसलिअे पैदा हुअी कि पासके गांवमें (भटगाम) बुनाअी-शाला खोली गअी है।

"मैंने गांवके बाहर मैदानमें खड्डे खोदकर बेकार कूड़े-कचरेका (कम्पोस्ट) खाद बनाया है। गांवके लोग अिस काममें मददगार साबित हुअे हैं। अगले वर्षसे खड्डोंकी संख्या बढ़ायेंगे और दूसरे भाअी भी अिस काममें रस लेंगे।

"हमारे गांवमें केवल चार गुजराती वर्गकी शाला है। पिछले सालकी अपेक्षा अिस साल विद्यार्थियोंकी कुछ संख्या बढ़ी है और अिसके लिअे हमारा जिला लोकल बोर्ड वर्ग भी बढ़ा देगा। शालाके आसपास मेहंदीका कम्पाअुन्ड भी बनाया है। साथ ही शीतलताके लिअे पीपल, बड़, नीम जैसे चार पेड़ भी बोये गये हैं। दूसरे पौधे गांवके आसपास बोकर वृक्षारोपणके कार्यमें भी हम मददगार साबित होंगे।"

अन्तमें यह भाअी जो अपना संक्षिप्त परिचय देते हैं, वह भी देखने लायक है:

"अन्नामाके गवर्नमेन्ट अेग्रिकल्चरल हाअीस्कूलमें खेती-बाड़ीके विषय लेकर मैंने अेस० अेस० सी० की परीक्षा पास की है। अेक हलके दर्जेकी नौकरी करनेके बजाय मैंने अपना ध्यान ग्रामसुधारकी ओर लगाया है।"

शिक्षित बेकार अिस तरह सेवा और स्वाश्रयके काम ढूंढ़ लें और अपने-अपने गांवोंमें अैसे कोअी रचनात्मक काम करें, तो कैसा अच्छा हो? अैसा क्यों मानना चाहिये कि कोअी पढ़ा-लिखा है अिसलिअे अुसे शहरमें ही जाना चाहिये और आरामके धंधे ही ढूंढ़ने चाहिये?

३१-७-'५३ मगनभाअी देसाअी

(गुजरातीसे)

हमारा नया प्रकाशन

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

दो साल पहले श्री विनोबाको भूदान-यज्ञकी जो क्रान्तिकारी कल्पना सूझी, अुसका अुदात्त सन्देश आज भारतके गांव-गांवमें पहुंच गया है। अितना ही नहीं, अिस आन्दोलनने भारतके बाहरके लोगोंका ध्यान भी अपनी ओर खींचा है। राज्यके हस्तक्षेप या कानूनकी मददके बिना श्री विनोबाने शांतिपूर्ण ढंगसे भारतकी सबसे बड़ी जमीनकी समस्या हल करनेके लिअे जो अहिंसक भूदान-आन्दोलन चलाया है, अुसकी भूमिका, आरंभ और क्रमिक विकासका पूरा चित्र श्री विनोबाके ही शब्दोंमें पाठकोंको अिस छोटीसी पुस्तकमें मिलेगा।

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-६-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-९

काश्मीरकी समस्या

छः बरस पहले पाकिस्तान अलग हुआ कि तुरन्त अुसने काश्मीर पर चढ़ाअी कर दी; हालांकि अुसने दिखावा यह किया कि सीमाप्रान्तके अफ्रीदियोंने काश्मीर पर धावा बोला है। लेकिन अुसका यह झूठ पक्के सबूतके साथ पकड़ा गया। अिसलिअे भारतने संयुक्त राष्ट्रसंघके सामने अिसकी शिकायत की। लेकिन अुसने आज तक अिस शिकायतकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया है।

फिर भी शरमकी खातिर कअी तरहकी जांच करने और कमीशन भेजनेका ढिलाअीका धन्धा पैदा करके अूपरके खास महत्त्वके सवाल पर पर्दा डालने, अुसका सीधा जवाब न देने या अुसे टालनेके लिअे राष्ट्रसंघने खूब पैसा, अक्ल और होशियारी तथा समय खर्च किया है।

भारतने अेक ही बात कही — काश्मीरकी प्रजाको वह जैसा चाहे वैसा करनेकी स्वतंत्रता होनी चाहिये। लेकिन काश्मीर आज भारतमें अपनी अिच्छासे मिला है, अिसलिअे वस्तुतः और कानूनसे वह भारतका है। अिसलिअे पहले अुसकी भूमि परसे पाकिस्तानकी विदेशी फौज तुरन्त हटनी चाहिये और आजाद काश्मीरकी कही जानेवाली फौज खतम होनी चाहिये। अुसके बाद ही काश्मीरकी जनता शान्तिसे आत्म-निर्णय कर सकती है।

अिस मुख्य वस्तुसे भारतको विचलित नहीं किया जा सका और 'यूनो' के अमरीकी और अंग्रेज राजनीतिज्ञोंको हार माननी पड़ी, वे थक गये। सत्यकी अिस विजयके लिअे हमें अीश्वरका आभार मानना चाहिये।

काश्मीरमें धोखेबाजी

अिस खुली बातके पीछे खानगी या गुप्त बातें चला ही करती थीं, अैसा अब तो कहा जा सकता है। लोगोंमें अैसी बातें आती रहती थीं। अन्तमें जब पंडित जवाहरलालजी लन्दन गये, तब तो अैसी पक्की लगनेवाली बात आअी कि काश्मीरके टुकड़े होंगे — अेक भारतको मिलेगा, दूसरा पाकिस्तानको और तीसरा स्वतंत्र देश बनेगा।

शेख अब्दुल्ला अेक बार शुरूमें अैसी बात बोले थे; फिर कुछ समय बाद हालमें कुछ महीनोंसे बीच-बीचमें अैसी बातें बोलते थे, जिनसे मालूम होता था कि वे स्वतंत्र काश्मीरके सपने देखते हैं। अिस तरह अुनके बोलनेमें दुरंगी नीतिका दर्शन होनेसे भारतमें कअी लोगोंको अुनके रुखके बारेमें यह शंका रहती थी कि कौन जाने यह आदमी कब क्या कर बैठेगा। अिस सबसे चिढ़कर या घबराकर जम्मूके लोगोंने तो भारतकी हिन्दूवादी ताकतोंके साथ मिलकर अिस डरके सामने सत्याग्रह करने तकका बीड़ा अुठा लिया।

छोटासा काश्मीर आजकी कमजोरको निगल जानेवाली दुनियामें स्वतंत्र तो रह ही कैसे सकता है? सिवाय अिसके कि अुसके पड़ोसी राज्य अुसे सलामतीका विश्वास दिलायें या गुप्त मददके लिअे किसी दूसरे देशके साथ अुसकी साठगांठ हो।

और अुसे अलग या स्वतंत्र रहनेकी जरूरत ही क्या है? अुसे अिसका अधिकार भी क्या है? स्वतंत्र रहनेका अुसका बूता कहां है? अुसके सामने प्रश्न अितना ही था कि वह पाकिस्तानके साथ मिले या भारतके साथ। वह कभी भी स्वतंत्र राज्य नहीं रहा। लेकिन पता नहीं किस बातसे शेख अब्दुल्लाको अपने स्वतंत्र राज्यका नाद लगा? भारत पर प्रभुकी कृपा है कि समय रहते यह बात खुल गअी और शेख अब्दुल्लाने जैसा बोया वैसा काटा। आज वे काश्मीरके मुख्यमंत्री नहीं, अुसके नजरबन्द हैं और अुन पर तरह तरहके गंभीर और खतरनाक आरोप लगाये गये हैं। अुनके स्थान पर गुलाम महम्मद बक्षी मुख्यमंत्री नियुक्त किये गये हैं।

www.vinoba.in

बाहर आनेवाली बातोंसे मालूम होता है कि अिस सारे कांडके पीछे विदेशी सूत्रसंचालन और प्रोत्साहन रहा है। किसका, यह पता नहीं चलता। लेकिन अिस बात पर संयुक्त राष्ट्रसंघको विचार करना चाहिये। जब वह संस्था शांतिके लिअे काम कर रही है, तो अुसे भी यह जानना चाहिये कि यह मैली और कपटी चाल कौन चलता है। अुसीके कुछ आदमी और दूसरे कुछ गोरे काश्मीरमें शंकाभरे काम करते पकड़े गये हैं। कोरियामें लाल चीनने आक्रमण किया अैसा कहकर संयुक्त राष्ट्रसंघके नाम पर तुरन्त लड़ाअीमें कूद पड़नेवाले अमरीकी काश्मीरमें अिस न्यायसे नहीं चले और दूसरी तीसरी बातें करने लगे — अिसे क्या कहा जाय? पाकिस्तानको राष्ट्रसंघने अितना भी न कहा कि तुम्हारा दोष है; बल्कि हमेशा अुसे राजी रखनेका ही प्रयत्न किया।

पाकिस्तान पर असर

शेख अब्दुल्लाके पतनसे पाकिस्तानमें अेक नया ही गुल खिला लगता है। अुसे मानो अैसा लगा कि जिस आदमीसे हमें कुछ फायदा होता वह तो चला गया; अब भारत न मालूम क्या करेगा! अिसलिअे वहांकी सरकार काश्मीरके लोकमत पर कुछ अजीब जोर देकर बातें करती है। मानो वह खुद भारतको यह नअी नीति सिखाना या पकड़ाना चाहती है! भारतने तो शुरूसे ही लोकमतकी बात कही है।

तब फिर पाकिस्तान आज भारतको अुसकी याद क्यों दिलाता है? अुसे शायद यह डर है कि काश्मीरकी लोकसभा ही यह प्रश्न हल कर डाले और लोगोंको न पूछे तो क्या होगा? लेकिन अैसे डरका कोअी कारण नहीं है। फिर भी अगर अुसके लिअे कोअी कारण हो, तो वह पाकिस्तान खुद ही पैदा करता है। वह काश्मीरकी भूमिको छोड़कर जाय नहीं और जो अुपद्रव अुसने वहां खड़ा किया अुसे शान्त न करे, तो लोकमत कैसे लिया जा सकता है? काश्मीरमें फौजके साथ अपना अधिकार बनाये रखकर क्या वह अिस प्रकारका कोअी हल चाहता है कि या तो लोकमत लिया जाय या लोकमत लिये बिना ही काश्मीरका किसी तरहका बंटवारा कर दिया जाय तो कोअी हर्ज नहीं? जाहिर है कि भारत अैसा नहीं कर सकता। अिसमें दोनों पक्षोंको निर्लोभ बनकर और यह मानकर चलना चाहिये कि जो कुछ करना हो लोकमत जानकर ही किया जाय।

और अगर पाकिस्तानी फौज काश्मीरसे न हटे और अिस प्रकार लोकमत लेनेमें बाधा डालती रहे, तो काश्मीरकी प्रजा और अुसकी वैधानिक सरकार, कोअी हाथ पर हाथ धरे थोड़े ही बैठनेवाली है। अुसकी लोकसभाको अपना राज्य तो व्यवस्थित रीतिसे संभालना ही होगा। और यह भी नहीं भूला जा सकता कि वह काश्मीरकी प्रजाकी प्रतिनिधि-सभा है।

अिसके अलावा, काश्मीरमें लोकमत लेनेका काम संयुक्त राष्ट्र-संघका है; अुसने यह जिम्मेदारी अपने सिर ली है। अिसलिअे अुसकी भी अिसमें परीक्षा होनेवाली है। क्या वह पाकिस्तानसे काश्मीरकी भूमि खाली करायेगा? अगर अुसकी नीयत साफ हो, तो अुसे खुद अिस विषयमें तीव्रता बतानी चाहिये। आशा रखें कि शेख अब्दुल्लाका भंडाफोड़ होनेके बाद राष्ट्रसंघके राजनीतिज्ञ कुछ अधिक जिम्मेदारीसे काम करेंगे।

१७-८-'५३

काश्मीरका लोकमत

अूपरकी पंक्तियां लिखी जानेके बाद पाकिस्तान और भारतके प्रधानमंत्रियोंने दिल्लीमें १७ से २० अगस्त तक चार दिन मिलकर क्या बातें कीं, अुनका थोड़ा-बहुत अंदाज हमें मिलता है। अिसकी अेक अधिकृत संयुक्त विज्ञप्ति भी दोनों पक्षोंकी ओरसे निकाली गयी है। अुस विज्ञप्तिने अनेक लोगोंके अिस डरको तो झूठ साबित कर दिया है कि दोनों प्रधानमंत्रियोंकी मुलाकात निष्फल साबित होगी। खुशीकी बात है कि आखिर वह सफल हुअी — भले सफलताकी मात्रा कम-ज्यादा आंकी जाय — क्योंकि विज्ञप्ति परसे यह स्पष्ट मालूम होता है कि काश्मीरमें लोकमत लेनेके बारेमें बात आगे बढ़ सकी है।

लोकमतके संबंधमें जो मुख्य बातें तय की जा सकी हैं, वे विज्ञप्तिमें अिस प्रकार बतायी गअी हैं:

१. काश्मीरकी समस्या हल करनेमें अुस राज्यकी प्रजाको आत्मनिर्णय करने दिया जाय।

२. अुसका अच्छेसे अच्छा तरीका यह है कि काश्मीरकी प्रजाका कुल मत लिया जाय। कुछ बरस पहले यह तरीका अख्तियार करनेका निश्चय किया गया था।

३. लेकिन लोकमत लेने जानेमें आरंभमें ही कुछ अड़चनें सामने आती हैं, जिन्हें समझकर दूर करना होगा। अुसके लिअे दोनों पक्षके फौजी तथा दूसरे निष्णात लोगोंकी सलाहकार-समितियां नियुक्त की जायंगी, जो दोनों प्रधानमंत्रियोंको सलाह देंगी।

४. ये आरंभकी अड़चनें दूर करनेके लिअे अब भारत और पाकिस्तान ही सीधा प्रयत्न करेंगे और खुद ही आपसमें समझौता करेंगे।

५. अिस समझौते पर अमल होनेके बाद आगेके कदमके तौर पर लोकमत लेनेकी व्यवस्था की जाय, जिससे अुस कामके लिअे कामचलाअू समयपत्रक जैसा तय किया जा सके।

६. समयपत्रकके बारेमें यह तय हुआ है कि अप्रैल १९५४ के अन्त तक जम्मू-काश्मीरकी सरकार अपना लोकमत-व्यवस्थापक नियुक्त करे और अुसे लोकमतका सारा काम सौंप दे।

७. लोकमत-व्यवस्थापककी नियुक्तिके पहले अूपर बताअी हुअी शुरूकी अड़चनोंके बारेमें तय करके अुसके मुताबिक अमल किया जाय; अिसके लिअे योग्य सलाहकार-समितियां नियुक्त की जायं।

दो प्रधानमंत्रियोंके बीच जो बातचीत हुअी, अुसकी विज्ञप्तिसे अूपरके मुख्य मुद्दे जाननेको मिलते हैं।

अिससे काश्मीरके प्रश्नके संबंधमें निश्चित प्रगति हुअी मालूम होती है। अब सवाल यह है कि:

१. जो शुरूकी अड़चनें हैं वे किसकी पैदा की हुअी और कौनसी हैं? वे सबकी जानी हुअी हैं: आजाद काश्मीर सरकारके नामसे पुकारी जानेवाली सत्ता काश्मीरके अमुक भाग पर कब्जा करके बैठी है, अुसका क्या? पाकिस्तानने काश्मीर पर चढ़ाअी की, अुसका क्या? क्या वहां फिरसे सब ठीक हो जायगा? और भारतके काश्मीर राज्यकी सत्ता सारे प्रदेश पर ठीक ठीक कायम करनेके बाद लोकमत लिया जायगा?

२. लोकमत किस प्रश्न पर लिया जायगा? अुसकी स्पष्ट व्याख्या क्या है?

३. काश्मीरका अमुक हिस्सा अगर भारत या पाकिस्तानके साथ मिलना चाहे, परंतु पूरे राज्यका कुल मत अुसके खिलाफ जाता हो तो क्या होगा? अुस अुस भागके लिअे क्या तय किया जायगा?

४. लोकमत-व्यवस्थापक कौन होगा? काश्मीर राज्य किसे लोकमत-व्यवस्थापक नियुक्त करेगा — संयुक्त राष्ट्रसंघ कहे अुसे या दोनों राज्य मिल कर तय करें अुसे? मतलब यह कि लोकमत-व्यवस्थापक नियुक्त करनेके काममें संयुक्त राष्ट्रसंघका अब भी कोअी हाथ रहेगा?

आज तक बातचीतमें जैसी सफलता मिली वैसी ही आगे भी मिले, यह देखनेका काम दोनों देशोंकी प्रजाका है। अुसके बारेमें दोनों

www.vinoba.in

देशोंका प्रजामत मजबूत होना चाहिये। अिस सम्बन्धमें अेक डर पाकिस्तानमें काम कर रहे जिहादवादी पक्षका है। अैसा लगता है कि अुस पक्षमें पाकिस्तानके कुछ मंत्री भी शामिल होंगे। यह पक्ष अैसा मानता है कि सारा काश्मीर पाकिस्तानको ही मिलना चाहिये और अुसके लिअे जिहाद करनेको तैयार रहना चाहिये। अैसे शुद्ध सम्प्रदायवादी पक्षसे बिलकुल मिलता-जुलता नहीं, फिर भी कुछ-कुछ अुसीके जैसा हिन्दू पक्ष हमारे देशमें भी नहीं है, अैसा नहीं कहा जा सकता। यद्यपि अिस पक्षने भी दोनों प्रधान-मंत्रियोंकी विज्ञप्तिका किसी हद तक स्वागत किया है। लेकिन अुसे आगेके मुद्दोंका भी शांति और सुलहकी भावनासे हल लानेके लिअे तत्पर बनना चाहिये — सारे देशको वैसा बनना होगा। हम आशा रखें कि पाकिस्तानमें हुअी हालकी राजनैतिक क्रान्तिके बाद वहां भी अैसी ही भावना पैदा करने और अुसे मजबूत बनानेमें नये प्रधानमंत्री श्री महम्मदअली सफल होंगे।

२४-८-'५३ मगनभाअी देसाअी

(गुजरातीसे)

मद्रासकी प्राथमिक शिक्षाकी योजना

मद्रास राज्यके शिक्षा-विभाग द्वारा प्राथमिक शिक्षाकी सुधरी हुअी योजना पर जो मार्गदर्शिका तैयार की गअी है, अुसकी प्रस्तावनामें राज्यके मुख्यमंत्री श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य कहते हैं: "अिसमें मुझे जरा भी शंका नहीं कि केवल अिसी योजना द्वारा अक्षरज्ञानको व्यापक बनाया जा सकता है और अक्षरज्ञान तथा शरीर-श्रमके बीचकी गहरी खाअीको सफलतापूर्वक मिटाया जा सकता है।"

मुख्यमंत्री आगे कहते हैं: "कला, संस्कृति, धर्म या शिक्षाके सारे अुच्च सिद्धान्तों और सुधारों पर हमारी मौजूदा अपूर्ण संस्थाओंके जरिये या जिन्हें हम तत्काल आरंभ करना चाहते हैं अुनके जरिये ही अमल करना होगा। कअी बड़े सुधारकोंने शिक्षा-पद्धति पर गहरा विचार किया है और हमारे स्कूलोंकी रचनामें समय-समय पर अिस आशासे सुधार होता रहा है कि अिन स्कूलोंमें दिया जानेवाला शिक्षण गुण और परिणामकी दृष्टिसे सुधरेगा।

"शिक्षाके क्षेत्रमें अन्तिम सुधार करनेवाले थे हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, जिन्होंने जीवनके हर क्षेत्रमें सुधार किया। अुन्होंने हमें बुनियादी तालीमके नामसे पहचानी जानेवाली शिक्षा-पद्धति दी; सार्जेन्ट-रिपोर्टने अुसे मान्य किया और भारत-सरकारके प्रस्तावने अुस पर अपनी स्वीकृतिकी मुहर लगा दी। हमारे कुछ स्कूलोंमें बुनियादी तालीम पर अमल किया गया। लेकिन अितना काफी नहीं है। हमारे मौजूदा स्कूलों और अुनमें काम कर रहे शिक्षकोंके सारे दोषोंके बावजूद हमें अपने सारे प्रायमरी स्कूलोंमें, जो कुछ भी साधन-सामग्री और सुविधायें अुनके आसपास अिकट्ठी की जा सकें अुनके साथ, गांधीजी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा-पद्धतिके सिद्धान्तों पर अमल करनेकी भरसक कोशिश करनी चाहिये।

"मैं अेक नम्र साहसिक हूँ। शिक्षा-मंत्रीने और मैंने शिक्षा-विभागके डायरेक्टरकी मददसे जो योजना तैयार की है, अुसे अगर हमारी वर्तमान साधन-सामग्री और मर्यादाओंको ध्यानमें रखकर कुछ समयके लिअे तुरन्त अमलमें लाअी जा सकनेवाली दूसरी अुत्तम योजनाके रूपमें भी स्वीकार कर लिया जाय तो मुझे सन्तोष होगा। मेरा यह पक्का विश्वास है कि मांगके अनुसार तत्काल तैयार किया हुआ अधूरा अुद्योग-शिक्षक बुनियादी तालीमके विकासके लिअे कार्यक्रम साधन नहीं हो सकता। मैं निश्चित रूपसे यह मानता हूँ कि अपने काम द्वारा रोजी कमानेवाले सच्चे किसान और कारीगरका हमें अिस काममें अुपयोग करना चाहिये। प्रस्तुत योजना मुख्यतः अिसी विश्वास पर रची गअी है। अिस नअी योजनाका बुनियादी तालीमके कार्यक्रमके अमल पर कोअी बुरा असर नहीं पड़ेगा। समय आने पर यह योजना हमें अैसे सच्चे शिक्षक देगी, जिनकी हमें बुनियादी तालीमके लिअे जरूरत है।

योजनाकी तफसील

"घटाये हुअे घंटोंवाली प्राथमिक शिक्षाकी योजना म्युनिसिपैलिटीकी सीमाके बाहरके सारे प्राथमिक स्कूलोंके निचले वर्गोंको लागू होगी। लेकिन बुनियादी तालीमकी शालाओंको यह लागू नहीं होगी, भले वे म्युनिसिपल सीमाके भीतर हों या बाहर। म्युनिसिपल सीमाके बाहरके प्राथमिक स्कूलोंके अूपरी दर्जोंको भी यह योजना लागू नहीं होगी।

स्कूलके घंटे

"पहलेसे पांचवें वर्ग तकके बच्चे दिनमें केवल तीन घंटे ही वर्गोंमें हाजिर रहेंगे। स्कूलोंके वर्ग दिनमें दो बार चलेंगे। हर बार वे तीन घंटे चलेंगे, जिन्हें ४०-४० मिनटके चार विभागोंमें बांट दिया जायगा। अुस बीच कमसे कम दो बारमें कुल बीस मिनटकी विद्यार्थियोंको छुट्टी दी जायगी।

"विद्यार्थियोंको दो समूहोंमें बांट दिया जायगा। अेक समूह अेक दिन सबेरेके वक्त वर्गोंमें पढ़ेगा और दूसरे दिन दोपहरके समय पढ़ेगा। अिस तरह बारी-बारीसे दोनों समूहोंकी पढ़ाअी चलेगी। अिस तरह दिन दो समूहोंमें बंट जायगा और दोनों समूहोंको सबेरे और दोपहरके वर्गोंमें पढ़नेका अेकसा मौका मिलेगा।

"शिक्षकोंको स्कूलमें दोनों समय हाजिर रहना पड़ेगा। आज कुछ जगहोंमें स्कूल हफ्तेमें पांच दिन या साढ़े पांच दिन चलते हैं, अुसके बदले अब वे आम तौर पर हफ्तेमें ६ दिन चलेंगे। पूरे सालके लिअे कामके कुल कमसे कम दिन आजकी तरह २२० ही निश्चित रहेंगे। अुसमें कोअी वृद्धि नहीं होगी।

पढ़ाये जानेवाले विषय

"स्कूलोंमें नीचेके विषय योग्य वर्गोंमें पढ़ाये जायंगे: (१) भाषा, (२) प्रारंभिक गणित, (३) ड्राअिंग, (४) कुदरतका अध्ययन, (५) अितिहास, (६) भूगोल, (७) आरोग्य और सफाअी शास्त्र, (८) नागरिक शास्त्र, (९) नीतिबोध और (१०) संगीत।

"अिन विषयोंकी पढ़ाअीमें आजके जितना ही समय दिया जायगा। यानी पढ़ाअीके कुल २१ घंटे (पीरियड) दिये जायंगे। नअी योजनाके अनुसार हफ्तेमें ६ दिन स्कूल चलेंगे और सब विषयोंको हफ्तेमें पढ़ाअीके २४ घंटे मिलेंगे। अिस तरह तीन घंटे बाकी रहेंगे, जिनका अुपयोग हेडमास्टर अपनी मर्जीके मुताबिक करेगा। अिसके अलावा, पहले दर्जेमें अितिहास और भूगोल नहीं पढ़ाया जायगा तथा दूसरे दर्जेसे अितिहासका शिक्षण हटा दिया जायगा। अिसलिअे अिन दो दर्जोंको आनंद-प्रमोदकी प्रवृत्तियोंके लिअे कुछ फाजिल घंटे मिलेंगे।

स्कूलके समयके बाहर

"स्कूलके समयके बाहर घर और गांवमें अमलके लिअे जो कार्यक्रम सोचा गया है, अुसे शिक्षणकी प्रक्रियाका अेक कीमती और महत्त्वपूर्ण अंग समझना चाहिये।

"यह कल्पना नहीं की गअी है कि स्कूलके बाहरके समयमें शुरूमें बच्चे अुद्योग-धंधोंमें काफी भाग लें। अुसमें यही अपेक्षा रखी गयी है कि बच्चे अपने आसपास चलनेवाले अुत्पादक और अुपयोगी कामको अच्छी तरह समझें, अुसकी कद्र करें और अिस तरह अपनेमें शरीर-श्रमके प्रति स्वस्थ दृष्टिकोणका विकास करें। अिस कार्यक्रममें केवल दस्तकारियोंका ही नहीं, बल्कि बच्चे कर सकें अैसे किसी भी शरीर-श्रमके कामका समावेश किया जा सकता है।

www.vinoba.in

अुत्पादक कामकी प्रवृत्तियां

"पहलेसे तीसरे वर्ग तकके बालकोंके लिअे शारीरिक प्रवृत्तियोंमें मुख्यतः खेलकूद, अवलोकन और जिस किसी चीजका वे अवलोकन करें अुससे संबंध रखनेवाली जिज्ञासाके समाधानका समावेश होता है। चौथे और पांचवें दर्जेके बच्चोंको भी गांवमें चलनेवाले विभिन्न प्रकारके अुत्पादक और अुपयोगी कामोंमें धीरे-धीरे, निश्चित रूपसे और दिनोंदिन अधिक मात्रामें भाग लेनेके लिअे प्रोत्साहित किया जायगा।

"स्कूलके बाहरके कार्यक्रमके समयपत्रकके बारेमें किसी प्रकारकी कट्टरता रखनेकी जरूरत नहीं। अिस संबंधमें अमुक मात्रामें अवश्य छूट रहेगी। बहुत छोटी अुम्रके बच्चोंके लिअे अमुक जगह ही जाना या अमुक निश्चित घंटों तक हाजिर रहना अनिवार्य न बनाया जायगा। बड़ी अुम्रके बच्चोंको चुनी हुअी जगहोंमें ज्यादा समय तक हाजिर रहनेका बढ़ावा दिया जा सकता है। लेकिन अिनके लिअे भी घंटोंके बारेमें काफी छूट रखी जा सकती है।

"खेतीके मौसममें बड़ी अुम्रके बहुतसे बच्चोंको गांवमें तथा अुसके आसपास चलनेवाले खेतीके अनेक आसान कामोंका अवलोकन करने, अुन्हें समझने और अुनमें सक्रिय भाग लेनेका प्रोत्साहन दिया जा सकता है। खेतीके मौसमसे बाहरके समयमें बड़ी हद तक दूसरे कामोंका कार्यक्रम बनाना जरूरी होगा।

कामके केन्द्र

"कोअी स्कूल अैसा हो जिसके आसपासकी बस्तीमें अिस प्रकारकी प्रवृत्तियोंमें बच्चोंको लगाना संभव न हो, तो अुस स्कूलको या तो अपने यहां या बाहर कामके केन्द्र शुरू करने चाहिये। परंतु अैसे केन्द्रोंमें भी शिक्षकके रूपमें वे ही कारीगर रखने चाहिये, जो अपना निर्वाह अुस कामके जरिये करते हों और अुस काममें होशियार हों। लेकिन चूंकि आम तौर पर खेती-काम और खास करके शाकभाजीका बगीचा लगाने और घर, स्कूल तथा गांवकी सफाअीके काम भी कार्यक्रममें शामिल किये जा सकते हैं, अैसे स्कूल कम ही होंगे जहां बाहरसे कारीगर लाने पड़ेंगे।

"अैसी आशा रखी जाती है कि बालिकाओंको तो अपने-अपने घरमें ही अिस तरहकी प्रवृत्तियोंके लिअे काफी मौका मिल जायगा। लेकिन जिनके मां-बाप यह चाहते हों कि अुनकी लड़कियां भी कोअी न कोअी अुद्योग सीखें अथवा दूसरे लड़कोंके साथ या अुनसे अलग रहकर गांवमें काम करें, तो अुन्हें अिसका मौका दिया जाना चाहिये।

"चूंकि कुछ लोगोंने यह सवाल अुठाया है, अिसलिअे यह बता देना जरूरी हो जाता है कि दुकानकी व्यवस्थामें मदद करना भी अेक अुद्योग माना जा सकता है; क्योंकि अुसमें भी पुड़ियां बांधना, चीजोंको अुठाना-रखना और दूसरे शारीरिक काम करने होते हैं।

कोअी दबाव नहीं

"यहां अिस बात पर खास जोर दिया जाना चाहिये कि स्कूलके बाहरके वक्तमें चलनेवाली सारी प्रवृत्तियां मां-बाप या बच्चों पर जबरन् लादी नहीं जायंगी। हमारा अुद्देश्य अैसा वातावरण और अैसी परिस्थितियां पैदा करनेका है, जिसमें सुधरी हुअी योजनाके अनुसार बनाये हुअे कार्यक्रममें बड़े लोग और मां-बापके साथ बच्चे भी दिनोंदिन ज्यादा हिस्सा लेने लगें।

"कम घंटेवाले स्कूलोंकी योजनाका सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व यह है कि अुद्योग-धंधा करनेवाले माता-पिता चाहें कि अुनके बच्चे स्कूलके बाहरके समयमें अुनके साथ रहें, तो अुन्हें अैसा करने दिया जाय। लेकिन अिस बातका थोड़ा भी दबाव अिसमें नहीं है कि अमुक अुद्योग करनेवाले वर्गके सभी बच्चोंको अुस अुद्योगकी तालीम अनिवार्य रूपमें लेनी ही चाहिये। काम चुननेमें माता-पिताको पूरी-पूरी स्वतंत्रता दी जायगी।

घरमें मदद

"पहला कदम यह है कि स्कूलके बाहरके समयमें बालक घर-काममें जो कुछ मदद कर सकते हों, वह अुनसे लेनेकी मां-बाप तथा बड़ोंको छूट दी जाय। अिसमें काफी बच्चोंको लगाया जा सकेगा। दूसरा कदम है बच्चोंको छोटे-छोटे समूहोंमें बांटकर अुन्हें अैसे केन्द्रोंमें भेजना, जहां गांवके कारीगर अपना काम करते हों। तीसरा कदम है बच्चोंको खेतीसे संबंध रखनेवाले ज्यादा आसान और सादे कामोंमें लगानेका प्रबंध करना। अिसमें भी काफी बच्चोंको रोका जा सकेगा। अिसके बादका कदम होगा शाकभाजीके बगीचों और घर, स्कूल व गांवकी सफाअी वगैरा छोटे-छोटे कामोंका अिन्तजाम करना। और अन्तमें जहां जरूरी हो, वहां स्कूलमें या अुसके अहातेमें किसी अनुकूल शरीर-श्रमके कार्यक्रमकी व्यवस्था की जा सकती है। बच्चोंको किसी न किसी अुपयोगी काममें लगानेके अुपरोक्त कदम अुठानेके बाद अिस बातकी ज्यादा संभावना नहीं रह जाती कि अधिक बच्चे बिना किसी कामके रह जायेंगे।

गांवकी स्कूल-समिति

"स्कूलके बाहरके जिस कार्यक्रमकी कल्पना की गअी है, अुसके अलग-अलग कामोंका मार्गदर्शन गांवकी स्कूल-समिति करेगी। स्कूलके बाहरकी प्रवृत्तियोंके कार्यक्रमके बारेमें न तो कोअी परिमाणमूलक और न दूसरे किसी प्रकारके स्तर निश्चित किये जायंगे और न विद्यार्थियोंको अेक दर्जेसे दूसरे दर्जेमें चढ़ानेके लिअे किसी तरहकी परीक्षा ली जायगी। बच्चोंके प्रसन्न और आनंदी रहने तथा अुपयोगी काममें लगे रहनेसे ही अिस कार्यक्रमकी सफलताकी जांच की जायगी।

आगेका शिक्षण

"यह पाठ्यक्रम पूरा करनेके बाद विद्यार्थी आजकी ही तरह प्राथमिक पाठ्यक्रमके अूंचे दर्जेमें दाखिल हो सकेंगे या माध्यमिक स्कूलके पहले दर्जेमें दाखिल हो सकेंगे। स्कूलके बाहरके कार्यक्रम-संबंधी कोअी भी कमी अिसमें रुकावट नहीं डालेगी।"

['हिन्दू', २८-७-१९५३]

(अंग्रेजीसे)

गांधीजीकी शिक्षा-विषयक पुस्तकें

बालपोथी

कीमत ०-३-० डाकखर्च ०-२-०

सच्ची शिक्षा

कीमत २-८-० डाकखर्च ०-१५-०

बुनियादी शिक्षा

कीमत १-८-० डाकखर्च ०-८-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-९

विषय-सूची

		पृष्ठ
हमारे सामने विकल्प	गांधीजी	२०१
बेकारीकी समस्या	विनोबा	२०१
बछड़ा और शेरनी	विनोबा	२०३
पूंजी अेक सामाजिक ट्रस्ट है	मगनभाअी देसाअी	२०३
बचत और सामाजिक सुरक्षा	मगनभाअी देसाअी	२०४
नौजवानोंके जानने लायक	मगनभाअी देसाअी	२०४
काश्मीरकी समस्या	मगनभाअी देसाअी	२०५
मद्रासकी प्राथमिक शिक्षाकी योजना		२०७

www.vinoba.in